# व्यवहारात्मक जनवाद

(2017 edition)

प्रणेता एवं लेखक : श्री ए. नागराज

Notes of Sanjeev Chopra
(A student of Madhyasth Darshan)

August, 2023

# व्यवहारात्मक जनवाद page 45

वार्तालाप को किसी लक्ष्य या प्रयोजन के सिलसिले में नियंत्रित करने पर संवाद कहलाता है.
यदि लक्ष्य या प्रयोजनों से जुड़ा न हो, ऐसे वार्तालाप को गपशप कहते हैं.

हर सूचना भी प्रयोजन के अर्थ में स्वीकार होती है, अन्यथा स्वीकार नहीं होती.

परिभाषा संहिता :
संवाद = पूर्णता के अर्थ में सूत्र व्याख्या

# व्यवहारात्मक जनवाद page 51

सार्थक संवाद के लिये सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व को समाधान रूप में पहचानने के उपरान्त न्याय, धर्म, सत्य ही सार्थक संवाद का आधार बन जाता है।

# व्यवहारात्मक जनवाद - प्राक्कथन

जनवाद का तात्पर्य : मानव मानव से बातचीत करता ही है, संवाद करता ही है, वाद-विवाद करता ही है. यह सबको पता है, यह सब यथावत रहेगा ही.....

हम मानव सदा से ही सुखी होना चाहते हैं..... इसके लिए दो प्रकार के प्रयोग हो चुके हैं.

- पहला, भक्ति-विरक्ति से सुखी होने का प्रयास.
- दूसरी विधि सुविधा-संग्रह से सुखी होने के लिए अथक प्रयास.

Ref अनुभवात्मक आध्यात्मवाद (2023 edition), page 27:

आस्थावादी विचार के मूल में : ईश्वर से सब पैदा होता है. आँखों से दिखने वाली वस्तुएं माया हैं.

भौतिकवाद के मूल में : वस्तु प्रधान हो गया.

# व्यवहारात्मक जनवाद या संघर्षात्मक जनवाद

Page 15 : सुदूर विगत से ही हम संघर्ष के लिये ही जनमानस को तैयार करने के क्रम में संघर्षात्मक जनवाद को अपनाते आये है। संघर्ष एक सर्वस्वीकृत वस्तु न होकर मजबूरी का ही प्रदर्शन है।

- समाधानात्मक भौतिकवाद या द्वंद्वात्मक भौतिकवाद
- अनुभवात्मक आध्यात्मवाद या रहस्यात्मक आध्यात्मवाद
- व्यवहारात्मक जनवाद या संघर्षात्मक जनवाद

# व्यवहारात्मक जनवाद Index

अध्याय


| | | |
|---|---|---|
| 1. | व्यवहारात्मक जनवाद क्यों | 1 – 16 |
| 2. | अभिनय और उसका परिणाम | 17 – 26 |
| 3. | व्यवहारात्मक जनवाद का स्वरुप (मानव व्यवहार) | 27 – 57 |
| 4. | व्यवहारवादी विचार की चर्चा | 58 – 60 |
| 5. | मानव का मूलरूप प्रवृत्तियों के आधार पर | 61 – 76 |
| 6. | व्यवहार – मानव परम्परा के साथ | 77 – 95 |
| 7. | व्यवहारवादी कार्यकलाप | 96 – 129 |
| 8. | जनचर्चा की आवश्यकता | 130 – 142 |

# Chapter-1, व्यवहारात्मक जनवाद क्यों

Page 2 : मानव परम्परा में राज्य, धर्म, अर्थ और शिक्षा-संस्कार सम्बन्धी सार्वभौम निष्कर्षों को पाने का प्रयास सदा ही रहा है।

इसकी असफलता का एकमात्र कारण मानव को एक इकाई के रूप में देखने, समझने, अध्ययन क्रम में सजाने.......की दिशा में प्रयास नगण्य रहा है।

हर समुदाय ने अपनी-अपनी संस्कृति, सभ्यताओं को मान्यताओं के आधार पर स्थापित कर लिया.....फलस्वरूप बारंबार टकराव की मुद्राएँ-घटनाएँ देखने को मिलती  रही।

जबकि अधिकांश मानव वाद-विवाद, झंझटों को नहीं चाहते हैं। परिस्थितियाँ इन तमाम घटनाओं के लिए बाध्य करती रहीं.....समुदायों का उलझना एक बाध्यता बनती रही है।

# Chapter-1, व्यवहारात्मक जनवाद क्यों

Page 3 : अधिकांश मानव युद्ध न चाहते हुए भी युद्ध वार्ता-चर्चा में उत्साहित होकर भाग लेते हैं.....अधिकांश जनमानस व्यापार चर्चा व लाभवादी विधाओं से उत्साहित होते हुए देखने को मिलते हैं.

Page 6 : सामान्य जनमानस सुविधा-संग्रह के मुद्दे पर रोमांचित, उत्साहित होता हुआ दिखता है. सुविधा-संग्रह विधा में जिनकी कुछ पहुंच बन चुकी है, ऐसे लोगों में भोग, अतिभोग, बहुभोग रोमांचिकता का मुद्दा बना हुआ देखने को मिलता है.

Page 7 : आज की स्थिति में जनचर्चा के सर्वाधिक मुद्दे सुविधा, संग्रह, भोग पर आधारित हैं.

# Chapter-1, व्यवहारात्मक जनवाद क्यों

Page 7 : सभी समुदायों में संघर्ष और भय अस्वीकृत होते हुए भी इसकी चर्चा बार-बार देखने को मिलती है......स्वीकृत होने वाले तथ्यों को चर्चास्पद बनाने में परम्पराएँ असमर्थ रही हैं.

जैसे हर मानव विश्वासपूर्वक जीना चाहता है.
विश्वासपूर्वक जीने की चर्चा......को परंपरा कोई दिशा नहीं दे पाई.

# Chapter-1, व्यवहारात्मक जनवाद क्यों

Page 4 : ....पीढ़ी दर पीढ़ी परिवर्तन की दिशा बनती रहती है। यही मानव परम्परा की विशेषता है.....

..... मानव को भले ही जीव जानवर कहते हों.......जानवरों में यथावत पिछली पीढ़ी के सदृश्य ही अगली पीढ़ी के कार्य-कलाप और प्रवृत्तियाँ देखने को मिलती हैं, जबकि मानव परंपरा में पीढ़ी से पीढ़ी में भिन्नताएँ व्यक्त होती ही रही है.... इन्हीं तथ्यों से पता चलता है, कि मानव जीव जानवरों से भिन्न है।

# Chapter-1, व्यवहारात्मक जनवाद क्यों

Page 5 : आदि मानव में और अत्याधुनिक मानव में इतना ही परिवर्तन दिखाई पड़ता है कि प्राकृतिक भय और पशु-भय (क्रूर जानवरों का भय) कम हो गया.

जैसे-जैसे ये भय कम हुए, मानव में निहित अमानवीयता का भय पराकाष्ठा की ओर प्रकाशित हुआ.

# Chapter-1, व्यवहारात्मक जनवाद क्यों

Page 12 : किसी भी विधि से प्राप्त संग्रह-सुविधा का तृप्ति-बिंदु न होने के कारण निरंतर ही अग्रिम सुविधा-संग्रह की प्यास जनमानस में क्रमशः बढती हुई देखने को मिलती है.

संग्रह-सुविधा अभी तक जिस चोटी में पहुँच चुकी है उतना सुविधा-संग्रह सबको मिलने की विधि इस धरती पर नहीं हो सकती. (page 13)

# Chapter-1, व्यवहारात्मक जनवाद क्यों

Page 13 : विकास का दावा जितने देश भी किये है उसमें अधिकांश भाग अत्याधुनिक सामरिक तंत्र और यंत्र ही है। इसका दूसरा भाग संग्रह-सुविधा, भोग, अतिभोग बहुभोग ही है। अथवा इसी ओर है।

संग्रह, सुविधा भोग के आधार पर जिन्हें विकसित देश बता रहे है उसकी सार्वभौमता के लिए हर व्यक्ति-परिवार उतना सुविधा-संग्रह और खर्च करने की आवश्यकता इच्छा करता ही है जबकि सबको सुविधा संग्रह समान मात्रा से मिल नहीं सकती।

इस विधि से सबको विकास तंत्रणा कहाँ पहुँचा? इसका उत्तर कौन देगा? कौन जिम्मेदार है ? राष्ट्रसंघ जिम्मेदार है ? या विकसित देश जिम्मेदार है ? यही दो तबके अपने को सर्वाधिक-अधिकाधिक विकसित होने का सत्यापन प्रस्तुत किये है।

# Chapter-1, व्यवहारात्मक जनवाद क्यों

Page 15 : युद्ध किसी के लिए वांछित घटना नहीं है फिर भी युद्ध की तैयारियां हर देश करता है. यह देश-देश के बीच मजबूरी की स्थिति है.

कोषालयों में देखें तो वहां भी अभेद्य कक्ष बनाये जाते हैं – इसके बावजूद भी वे लूटे जाते हैं.

इन सभी घटनाओं को याद दिलाने के मूल में एक ही मकसद है – हम मानव को अभी व्यवस्था में जीना है. ऐसी समझदारी विकसित नहीं हुई है....इसलिए जनवाद में व्यवस्था रुपी व्यवहार चर्चा को पहल करना परम आवश्यक है.

# Chapter-2, अभिनय और उसका परिणाम

<u>Definition of अभिनय (परिभाषा संहिता में)</u>:
स्वयं अमानवीयता में प्रवृत्त रहते हुए मानवीयता, देव मानवीयता का काल्पनिक विधि, वेश, भाषा, भाव भंगिमा अंगहार सहित प्रदर्शन.

<u>Definition of pretending (feigning / acting)</u>:
Exhibition of humaneness and godly-humaneness by way of imagination with associated clothing, language, emotions, postures, gestures, while one is primarily living in inhumanness.

# व्यवहारात्मक जनवाद page 19

मानव के साथ मानव की चर्चा का, वार्तालाप के निष्कर्ष का, संवादों का आधार होना एक आवश्यकता है क्योंकि जिस विधि से हम आदि काल से अभी तक गतित हुए हैं, उस चर्चा में भ्रमात्मक भाग ही सर्वाधिक है. प्रयोजनवादी यथार्थ का भाग न्यूनतम है. इसको हम भली प्रकार से मूल्यांकन कर सकते हैं.

पूर्णतः प्रयोजनशील यथार्थ को रोज़मर्रा की चर्चा में ला सकते हैं.

# Chapter-3,
# व्यवहारात्मक जनवाद का स्वरुप (मानव व्यवहार)

Page 28 : चर्चाओ की विविधता के पक्ष में ध्यान देने पर पता लगता है युद्ध-व्यापार महत्वपूर्ण बिन्दुओ के रूप में रहता ही है। संग्रह सुविधा का बखान, भक्ति विरक्ति का गायन कथा ये भी जनमानस में चर्चा का विषय बना रहता हुआ देखने को मिला... .......मानव इतिहास के अनुसार अभी तक मानवीयता पूर्ण दिशा अथवा मानव सहज दिशा अथवा जनाकांक्षा किसी परम्परा में स्थापित नहीं हो पायी।

# व्यवहारात्मक जनवाद page 30

रहस्यमयी ईश्वरवादी और भौतिकवादी (संघर्ष केन्द्रित) विधियों से मानव का अध्ययन मानव के लिये सन्तुष्टिदायक नहीं हो पाता है।

Humans can not be (or have not been) satisfied by the study of humans offered by ways of mystery based spiritualism and struggle based materialism.

# व्यवहारात्मक जनवाद page 32

सर्वधर्म चर्चाओ में मानव को तार्किक जानवर के रूप में ही निरूपित करते आये। मानव के संदर्भ में विज्ञान प्रयोगो और विचारो को चलने का निष्कर्ष *(भी)* इतना ही निकला।

In discussions of all religions, humans have been depicted only as animals with logic; scientific experiments and thoughts too concluded only this much with reference to humans.

# व्यवहारात्मक जनवाद page 36-37

इस धरती पर अनेक स्थानो पर खंडहर, इमारत, स्मारक और बड़े बड़े किले देखने को मिलते है.....ये सब अपनी सुविधा सुरक्षा और स्मरणार्थ की गयी रचनाओं की गवाही है।

राज्य मानसिकता के काल में बड़े बड़े किले बना कर किले में निवास करने वालो को सुरक्षित माना जाता रहा यह परस्पर युद्ध मानसिकता से जुडी हुई कृत्यो के परिणामों के स्वरूप में आज भी स्मरण दिलाया करते है।

युद्ध मानसिकता से कही पहुँच पायेगे ?.....कहा जाता है युद्ध शान्ति के लिए किन्तु ऐसी स्थिति कभी घटित हुई नहीं है....

सार्थकता की ओर पहला मुद्दा यही है – मानव कुल में युद्ध मुक्ति हो.
अगला प्रश्न – युद्ध मुक्ति का आधार स्रोत क्या है ?

# व्यवहारात्मक जनवाद page 37

बाल्यावस्था से किशोरावस्था तक संरक्षण में, पोषण में भरोसा रखने वाली प्रवृत्ति मिलती है। संरक्षण पोषण के क्रम में न्याय की अपेक्षा प्रस्फुटित होती हुई देखने को मिलती है।
किशोर अवस्था तक सही कार्य व्यवहार करने की इच्छाएं आज्ञापालन, अनुसरण, सहयोग के अनुकरण के रूप में प्रवृत्तियों को देखा जाता है। यह बहुत अच्छे ढंग से समझ में आता है।

यह जन चर्चा का विषय है। संवाद के लिए ये दोनो मुद्दों अच्छे ढंग से सोचने, परीक्षण, निरीक्षण, सर्वेक्षण करने व्यवहार विधि से विचारो को सम्बद्ध करने में काफी उपकारी हो सकते है।

# व्यवहारात्मक जनवाद page 38

तीसरा मुद्दा देखने को मिलता है कि हर मानव संतान शिशुकाल से ही जब से बोलना जानता है तब से जो भी देखा सुना रहता है उसी को बोलने में अभ्यस्त रहता है। इस ढंग से हर मानव संतान बाल्यकाल से ही सत्य-वक्ता होना आकलित होता है। जबकि सत्यबोध उनमें रहता नहीं है। शब्दों को बोलना ही बना रहता है।

इससे यह भी पता लगता है मानव परम्परा का दायित्व है कि मानव संतान को सत्य-बोध कराएं।

इसी के साथ सही कार्य, व्यवहार का प्रयोजन बोध सहित पारंगत बनाने की आवश्यकता है। न्याय बोध हर संतान को कराने का दायित्व परम्परा के पक्ष में ही जाता है....ये सब जन चर्चा के लिए बिन्दुएं है।

# व्यवहारात्मक जनवाद page 38

आज की स्थिति में सर्वमानव अथवा सर्वाधिक मानव सुविधा-संग्रह के अर्थ में, लक्ष्य में ही चर्चा, परिचर्चा, योजना की बाते सुनने में आ रही है……समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व  की ओर दिशा नहीं पा रहे हैं……

क्या परिवर्तन के लिए शुरू आत करे, इसके लिए मानवाकांक्षा ही ध्रुव बिन्दु आती है। मानवाकांक्षा सर्वमानव में स्वीकृत है……समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व के रूप में प्रमाणित होने के लिए सहमति सर्वमानव में अथवा सर्वाधिक मानव में होता ही है।

इसी आधार पर जनसंवाद को मनावापेक्षा के ध्रुवों के ऊपर गतिशील बनाए रखने के लिए आवश्यकता बनती है……यही जनसंवाद का आधार और प्रवृति है।

# व्यवहारात्मक जनवाद page 40

हर व्यक्ति व्यवहार प्रवृति में रहता है क्योंकि किसी न किसी मानव के साथ जीना है....

जागृत आदमी के साथ एक या अनेक भ्रमित आदमी जीने की स्थिति में जिम्मेदारी जागृत आदमी की ही होती है कि भ्रमित आदमी को जागृत पद के लिये और जागृति के लिए प्रेरित करे। मूलतः एक पक्ष जागृत रहना मुख्य मुद्दा है।

अब जागृति हमारे संवाद का मुद्दा बनता है।

# व्यवहारात्मक जनवाद page 41

जन चर्चा के मुद्दे में पूरकता एक मुद्दा है। पूरकता के आधार पर ही जनचर्चा द्वारा, संवाद द्वारा, स्पष्टीकरण द्वारा समाधान के छोर तक पहुँचते है।

# व्यवहारात्मक जनवाद page 42

सम्बन्ध की परिभाषा ही है "पूर्णता के अर्थ में अनुबंधित रहना"....हम मानव समझदारी पूर्वक ही समाधानित होते हैं और वर्तमान में विश्वास अर्थात सम्बन्ध की पहचान और उसकी निरन्तरता बनाए रखने में निष्ठा ईमानदारी होने का प्रमाण है। पहचान और उसकी निरन्तरता स्वयं जिम्मेदारी के रूप में स्पष्ट होती है। इस प्रकार, समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी पूर्वक ही परिवार व्यवस्था में प्रमाण और समग्र व्यवस्था में भागीदारी होना और समृद्धि का साक्ष्य स्पष्ट होना पाया जाता है।

इसके लिए परिवार में चर्चा, परिवार के कार्य-व्यवहार के लिए चर्चा, संवाद और परिवार लक्ष्य के लिए संवाद मानव परंपरा में सम्पन्न होना एक प्रतिष्ठा है।

# व्यवहारात्मक जनवाद page 45

सहअस्तित्ववादी नजरिया से यह स्पष्ट होता है सुखी होने के लिए समाधान अपरिहार्य है.

सुख को मानव के धर्म के रूप में पहचाना गया है.

सदा से मानव सुखी होने के लिए इच्छुक प्रयत्नशील रहा ही है.

# व्यवहारात्मक जनवाद page 48

संवाद के लिए यह भी एक प्रधान मुद्दा है *(कि)* सुखी होने के लिए समाधानित होना ज़रूरी है. समाधान के लिए समझदारी और व्यवस्था में जीने की तमन्ना और अभ्यास आवश्यक है.

समाधान अपने (में) शरीरगत वस्तु है या जीवनगत है? इस बात की चर्चा भी मानव कुल में प्रासंगिक है.

# व्यवहारात्मक जनवाद page 48

निष्कर्षों को मानव परम्परा में स्थापित करना मानव का उद्देश्य है.

भौतिकवाद, आदर्शवाद अपने-अपने तरीके से निष्कर्ष निकालने की कोशिश किए......

बहुत प्रकार से प्रयत्न तो किया है. *(पर)* मतभेद और संघर्ष से मुक्ति मानव कुल को मिली नहीं.....

# ज्ञान, विवेक, विज्ञान

Page 50 : जागृति और समझदारी अविभाज्य है। समझदारी अपने में ज्ञान, विज्ञान, विवेक के रूप में कारगार होने की स्थिति चर्चा में आ चुकी है।

ज्ञान, विज्ञान, विवेक का संयुक्त नाम है समझदारी।

विवेक और विज्ञान के मूल में ज्ञान ही प्रधान वस्तु है। ज्ञान अपने स्वरूप में सत्ता में सम्पृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति है।

ज्ञान होने के लिए ज्ञाता की पहचान होना जरूरी है। ज्ञाता अपने स्वरूप में जीवन होना पाया जाता है।

# समाधान

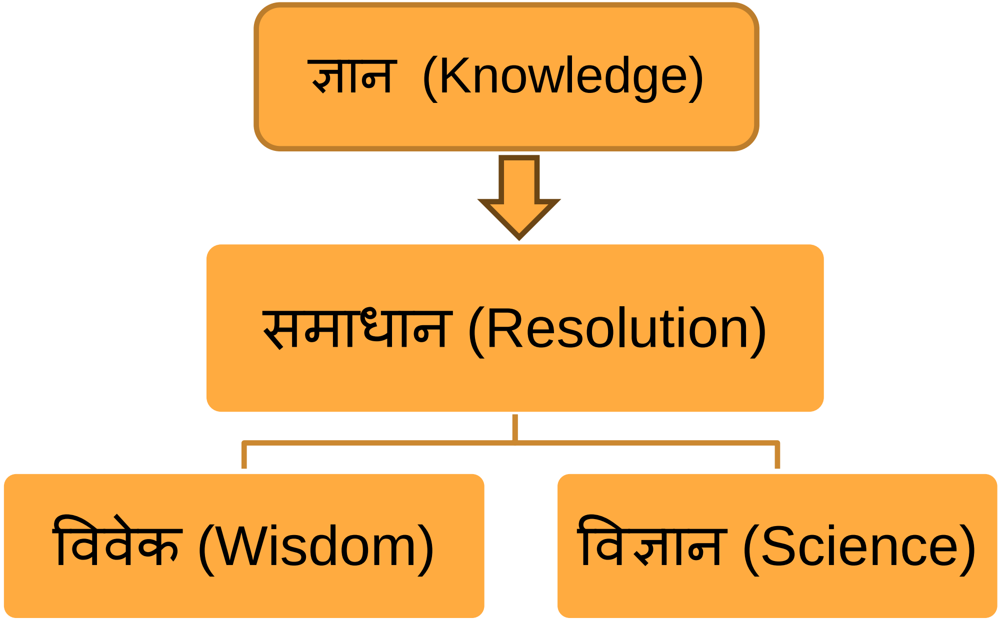

# समाधान

## ज्ञान (Knowledge)

- अस्तित्व दर्शन ज्ञान
- जीवन ज्ञान
- मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान

## विवेक (Wisdom)

- शरीर का नश्वरत्व
- जीवन का अमरत्व
- व्यवहार के नियम

## विज्ञान (Science)

- क्रियावादी
- कालवादी
- निर्णयवादी

# Page 50-51, जीवन क्रिया

समझना ↑

| बल | क्रिया | | शक्ति |
|---|---|---|---|
| स्थिति | स्थिति | गति | गति |
| आत्मा (मैं) | अनुभव | प्रमाण | प्रमाणिकता |
| बुद्धि | बोध | संकल्प | ऋतम्भरा |
| चित्त | चिंतन / साक्षात्कार | चित्रण | इच्छा |
| वृत्ति | तुलन | विश्लेषण | विचार |
| मन | आस्वादन | चयन | आशा |

↓ जीना, समझाना

# व्यवहारात्मक जनवाद page 55

……निश्चयता में ही मानव जीना चाहता है। अनिश्चयता मानव को स्वीकृत नहीं है। भ्रम की स्थिति में भी निश्चयता की अपेक्षा मानव में, से, के लिए निहित रहती ही है।

निश्चयपूर्वक  ही मानव धरती पर चल पाता है। हवा पर चलता है और पानी पर चलता है। इसी प्रकार अन्य गतियों में भी निश्चयता की अपेक्षा बनी हुई है….

संवाद में स्थिरता निश्चयता को निरूपित करना मानव परम्परा के लिए एक आवश्यकता है……. व्यापक वस्तु भी स्थिर रूप में ही व्याख्यायित होती है।

# व्यवहारात्मक जनवाद page 56

समझदारी ध्रुवीकरण होना, समझदारी निश्चित होना अभी तक विचाराधीन रहा है। मध्यस्थ दर्शन, सहअस्तित्ववाद के अनुसार अस्तित्व दर्शन, जीवन ज्ञान, मानवीयतापूर्ण आचरण के रूप में समझदारी ध्रुवीकृत हो जाती है। ध्रुवीकरण का तात्पर्य समझदारी का बोध और अनुभव होने से है.....

व्यवहारात्मक जनवाद का तात्पर्य समझदारी पूर्ण विधि से संवाद पूर्वक व्यवहार को ध्रुवीकरण करने की सम्पदा का समावेश हो, और प्रमाणित हो।

# व्यवहारात्मक जनवाद Chapter-3

Page 47 : मानव भी या तो जीवो के सदृश्य शरीर को जीवन मानते हुए अथवा नहीं मानते हुए जीता है।

Page 56 : जब तक शरीर को जीवन मानता रहता है, तब तक भ्रमित रहना स्वाभाविक है। जीवन और शरीर का स्पष्ट अध्ययन होने के उपरान्त जागृति का प्रमाण होना पाया जाता है।

# व्यवहारात्मक जनवाद

Page  10 : भौतिकवादी विचार के साथ यह भी एक भ्रम पीछे पड़ा ही रहा कि "विकास अन्तविहीन होता’’ है।

Page  87-88 : सम्पन्नता को भ्रमवश सुविधा संग्रह मान चुके है जबकि जीवन जागृति सर्वोपरी सम्पन्नता है। जागृति के उपरान्त ही हर मानव क्लेश, दु:ख, विपन्नता भ्रम से मुक्त हो सकता है इसे हम भले प्रकार से जीकर देखे है। हर व्यक्ति सम्पन्नता पूर्वक जीना चाहता है इसका मूल वैभव केवल समझदारी ही है। समझदारी का अर्थ पहले से इंगित हो चुकी है। इस मुद्दे पर जनचर्चा और स्वीकृति और जिज्ञासा की आवश्यकता है।

# Chapter-4, व्यवहारवादी विचार की चर्चा

Page 59 : मानव मानव के साथ व्यवहार में व्यतिरेक वश, जो पीड़ाएं, समस्याएं होती है वे भ्रमवश ही होती है। भ्रमवश सभी कृत्यों के मूल में करने वाला अपने को ठीक करना ही माना रहता है.......

मानव के भ्रमित रहने का मूल कारण परम्परा जागृत न रहना ही है।

# Chapter-5,
# मानव का मूलरूप प्रवृत्तियों के आधार पर

Page 65 :
मानव परम्परा के इतिहास के अनुसार सामान्य और महत्वाकांक्षा सम्बंधी वस्तुओं की उपलब्धि जैसे-जैसे हुई, उससे तृप्त होने की इच्छा मानव में होती रही। उसके बाद किसी वस्तु की कमी महसूस होती थी तो उसके मिलने से तृप्त हो जायेंगे, सुखी हो जायेंगे, ऐसा सोचते थे।

संयोग वश आज सभी वस्तुएँ उपलब्ध हो गई, कई लोग प्राप्त भी कर लिये, इसके बावजूद सुखी होने का लक्षण कहीं उदय हुआ नहीं।

इस आधार पर मानव का लक्ष्य क्या हो सकता है ?

# व्यवहारात्मक जनवाद page 65 – 66

## उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजनशीलता

Page 66 : हम मानव जागृतिपूर्वक ही सम्पूर्ण वस्तुओं की उपयोगिता, सदुपयोगिता, प्रयोजनीयता को प्रमाणित करते है

उपयोग: - उत्पादन व सेवा के लिए प्रयुक्त अर्थ की उपयोग संज्ञा है.

सदुपयोग: - परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था में भागीदारी करते हुए तन, मन, धन रूपी अर्थ का नियोजन सदुपयोग है.

प्रयोजन: - जागृति पूर्णता पूर्वक अखंड समाज सार्वभौम व्यवस्था में तन, मन, धन का नियोजन प्रयोजन है.

- Ref : मानव व्यवहार दर्शन (2015 edition), Page 17

# व्यवहारात्मक जनवाद page 65 – 66

उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजनशीलता – contd.

आवर्तनशीलता क्रम में उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजनशीलता का तथ्य स्पष्ट होता है.

हम तन, मन, धन की उपयोगिता को उत्पादन में देखते ही हैं. और मानव के शरीर पोषण संरक्षण के रूप में उपयोगिता को पहचाना जाता है.

सदुपयोगिता = तन, मन, धन को व्यवस्था के रूप में जीने, समग्र व्यवस्था में भागीदारी को निर्वाह करने में प्रायोजित होना

प्रयोजनशीलता = तन, मन, धन प्रमाणिकता और उसकी निरंतरता में प्रयोजित रहने का क्रियाकलाप. प्रयोजनों का स्वरुप जागृति और उसकी परंपरा ही है.

- Ref : आवर्तनशील अर्थशास्त्र, page 152

# व्यवहारात्मक जनवाद page 67

भ्रमवश हम मानव यही कहते रहे हैं कि आवश्यकता अनंत है साधन सीमित हैं।
इसलिए संघर्ष करना जरूरी है.....इस मुद्दे पर भी जनचर्चा की आवश्यकता है।

*प्रश्न 1 : हम क्या चाहते है – संघर्ष या सह-अस्तित्व ?*

*प्रश्न 2 : आवश्यकताएं क्या वास्तव में अनंत हैं ?*

भ्रमित जन मानस में भी न्याय, धर्म, सत्य की अपेक्षा रूप में स्वीकृति बनी हुई है किन्तु उसी के साथ-साथ परम्परा में इसकी प्रामाणिकता की उपलब्धता नहीं रहने के कारण मानव अपने अपने तरीके से जीवों से अच्छा जीने के स्वरूप को बना लेता है।

# मानवीयता पूर्ण आचरण

Page 68 : मानवीयता पूर्ण आचरण अपने में त्रिआयामी अभिव्यक्ति है - मूल्य, चरित्र और नैतिकता.

Page 93 : मानवीयतापूर्ण आचरण का पहला आयाम सबंधो को पहचानना, मूल्यो का निर्वाह करना, मूल्यांकन करना, परस्परता में तृप्ति को पाना।
दूसरा आयाम में स्वधन, स्वनारी/स्वपुरूष, दयापूर्ण कार्य करना।
तीसरे आयाम में तन, मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग सुरक्षा करना। तन, मन, धन रूपी अर्थ के सदुपयोग का तात्पर्य परिवारगत आवश्यकता के अनुसार शरीर पोषण संरक्षण और समाजगति में नियोजित करना।

मानव समाज अखंड समाज ही होता है। समाज गति का तात्पर्य अखंड समाज के अर्थ में भागीदारी करना अर्थात सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी करना।

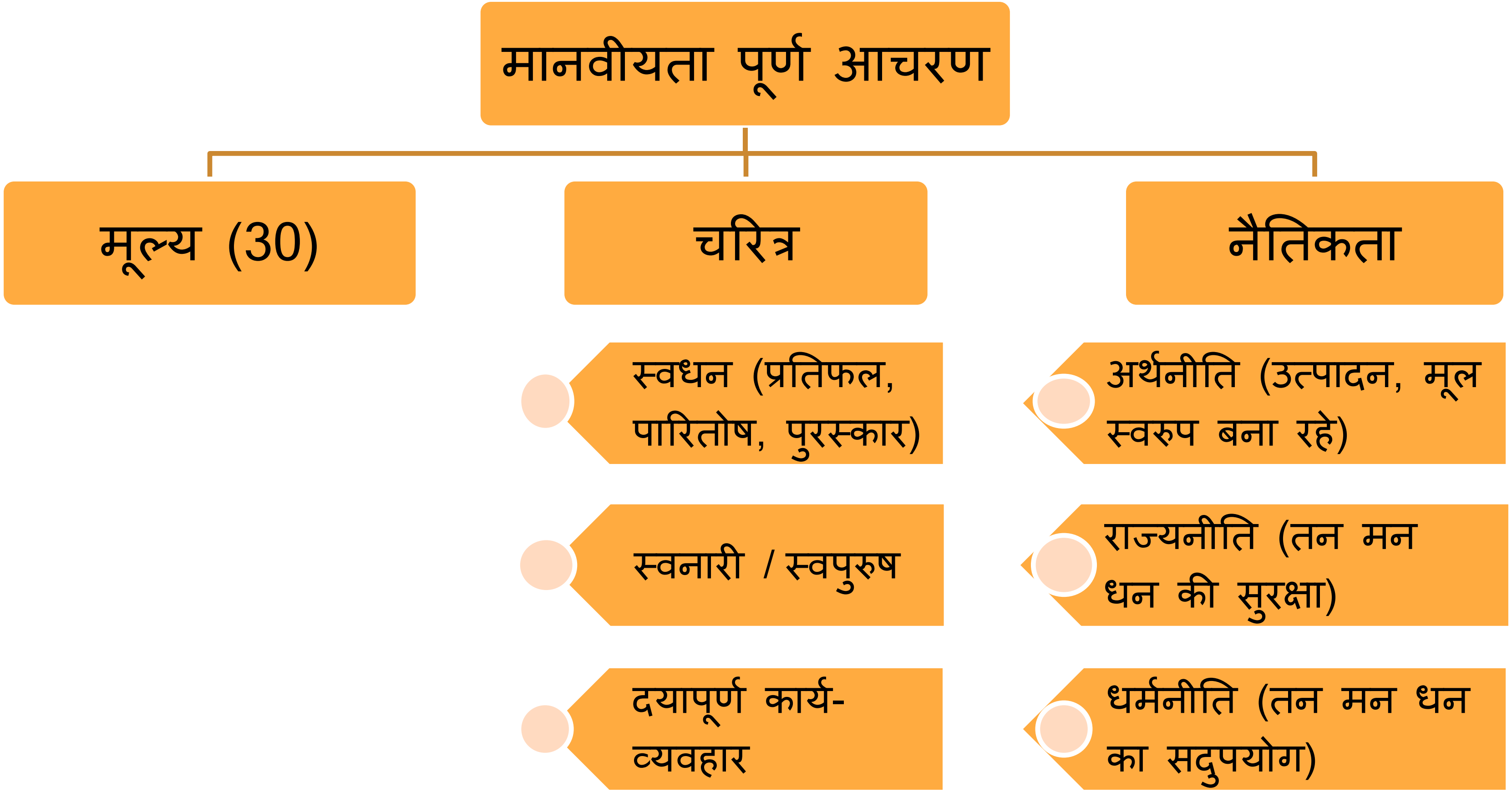
मानवीयता पूर्ण आचरण
मूल्य (30)
चरित्र
नैतिकता
स्वधन (प्रतिफल, पारितोष, पुरस्कार)
स्वनारी / स्वपुरुष
दयापूर्ण कार्य-व्यवहार
अर्थनीति (उत्पादन, मूल स्वरुप बना रहे)
राज्यनीति (तन मन धन की सुरक्षा)
धर्मनीति (तन मन धन का सदुपयोग)

मध्यस्थ दर्शन

# 30 Values (30 मूल्य)

| स्वयं में (10) | | संबंधों में मूल्य (18) | | शेष प्रकृति में |
|---|---|---|---|---|
| जीवन मूल्य (4) | मानव मूल्य (6) | स्थापित मूल्य (9) | शिष्ट मूल्य (9) | वस्तु मूल्य (2) |
| सुख | धीरता | विश्वास | सौजन्यता | उपयोगिता मूल्य,<br>कला मूल्य |
| शांति | वीरता | सम्मान | सौहार्दता | |
| संतोष | उदारता | स्नेह | निष्ठा | |
| आनंद | दया | ममता | उदारता | |
| | कृपा | कृतज्ञता | सौम्यता | |
| | करुणा | वात्सल्य | सहजता | |
| | | श्रद्धा | पूज्यता | |
| | | गौरव | सरलता | |
| | | प्रेम | अनन्यता | |

# व्यवहारात्मक जनवाद page 68

मानवीय शिक्षा में जीवन एवं शरीर का बोध …….होना ही प्रधान मुद्दा है।

इन मुद्दों पर संवाद होना आवश्यक है।

Page 69 : जीवन ही दृष्टा है और शरीर को जीवन्तता प्रदान करता है। जीवन्त शरीर में ही संवेदना स्पष्ट होती है……….. जीवन मानव शरीर को जीवन्त बनाए रहता है इसी के साथ जीवन अपनी तृप्ति को क्रिया पूर्णता, आचरणपूर्णता के रूप में प्रमाणित करने को प्रयासरत रहता है। इसी महत्वपूर्ण कारणवश संवेदनाओ से जीवन तृप्ति नहीं हो पाई।

# व्यवहारात्मक जनवाद page 70

मानव अपार सुविधा-संग्रह को पाते हुए अथवा जो पाये हैं उनमे तृप्ति का प्रमाण तो हुआ भी नहीं, और संग्रह-सुविधा की प्यास अति की ओर होता हुआ मिला. यह भी इस बात का द्योतक है कि तृप्ति बिंदु और कहीं है.

तृप्ति के लिए हर मानव तृशान्वित है ही. इसका निराकरण समाधानपूर्वक होना देखा गया.....

हर मानव तृप्ति पूर्वक ही जीने का इच्छुक है. ऐसी तृप्ति सुख, शांति, संतोष, आनंद के रूप में पहचान में आती है....इसकी आवश्यकता के लिए जनचर्चा....

# व्यवहारात्मक जनवाद page 76

घर बनाना उसके लिए मिट्टी पत्थर जो कुछ भी द्रव्य हैं उनको विधिवत संजो देने से घर बनता ही है, इसमें गलती होने से घर गिरता है.

अस्तु हर लक्ष्य के लिए जितने भी साधन होते हैं, उनको सार्थकता के अर्थ में सजाना है.

*(समझदारी / समाधान संपन्न होने की भी कोई विधि है. उस पर स्पष्ट चर्चा आवश्यक है).*

# Chapter-6, व्यवहार – मानव परम्परा के साथ

Page 78 : एक से अधिक मानव की परस्परता में लक्ष्य सम्पन्न होने के अर्थ में किया गया सभी क्रिया, प्रक्रिया, वाद, संवाद ये सब व्यवहार नाम है।

व्यवहार सदा-सदा से होता ही आया है। भले लक्ष्य ओझिल क्यो न हो।

अभी तक मानव को अपनी परम्परा में लक्ष्य की अपेक्षा तो रही है।

# व्यवहारात्मक जनवाद page 82

संज्ञानशीलता पूर्वक ही व्यवस्था और व्यवस्था में भागीदारी हो पाती है।

ऐसी स्थिति में मानव का आचरण निश्चित, नियंत्रित हो पाता है।

निश्चित होने के आधार पर सम्पूर्ण आचरण समाधान सम्पन्न रहना पाया जाता है।

समाधान पूर्ण विधि से आचरण करने के क्रम में संवेदनाएँ नियंत्रित रहना देखा गया है।

संवेदनाएँ नियंत्रित होना परस्परता में विश्वास का महत्वपूर्ण आधार है।

# व्यवहारात्मक जनवाद page 86

यह भी चर्चा का मुद्दा है कि हम शासन में जीना चाहते हैं या व्यवस्था में.

यदि शासन चाहते हो तब अभी तक हो रहे भ्रष्टाचार, दुराचार, अनाचार उसी प्रकार होते रहेंगे.

# व्यवहारात्मक जनवाद page 87

विपन्नता से संपन्नता की ओर मानव प्रवृत्ति की आवश्यकता है।

सम्पन्नता को भ्रमवश सुविधा संग्रह मान चुके है जबकि जीवन जागृति सर्वोपरी सम्पन्नता है। जागृति के उपरान्त ही हर मानव क्लेश, दुख, विपन्नता, भ्रम से मुक्त हो सकता है इसे हम भले प्रकार से जीकर देखे हैं। हर व्यक्ति सम्पन्नता पूर्वक जीना चाहता है इसका मूल वैभव केवल समझदारी ही है। समझदारी का अर्थ पहले से इंगित हो चुका है।

इस मुद्‌दे पर जनचर्चा और स्वीकृति और जिज्ञासा की आवश्यकता है।

# व्यवहारात्मक जनवाद page 90-91

मानव यदि समझदार होते है तो गलती और अपराध करेगें ही नहीं......सारे अपराध, अन्याय और गलतियाँ मानव के नासमझी की उपज है।

समझदारी के उपरान्त मानव का आचरण निर्धारित हो जाता है, ध्रुव बिन्दु यही है।

# व्यवहारात्मक जनवाद page 92

एक ज्वलंत प्रश्न है किताब प्रमाण होगा, यंत्र प्रमाण होगा या मानव प्रमाण होगा ? ………… यंत्र और किताब के प्रमाण के आधार पर मानव कुल अभी तक स्वराज्य और स्वतंत्रता का इन्तजार करता ही आया है।

‘What or who will be the evidence - book, instrument or a human being?’ is a relevant question…….So far, humankind has assumed instruments or books to be the evidence, and self-governance and independence are still awaited.

# व्यवहारात्मक जनवाद Chapter-7

Page 98 : मानव का अच्छा कपड़ा, अच्छा खाना, गाडी घोड़ा, पद पैसा सम्मान का उद्देश्य बनता है उसी क्रम में समझदार बनने का उद्देश्य भी स्वाभाविक है।

# व्यवहारात्मक जनवाद page 98

यह भी सर्वेक्षित है कि समझदारी की अपेक्षा छोटी आयु से ही प्रभावशील रहती है। कुछ आयु तक पद पैसा सम्मान को लक्ष्य बनाकर जैसा भी आदमी जूझता है अच्छे बुरे तरीके से कुछ पाता भी है खोता भी है। इस क्रम में हम चलते हुए कोई न कोई ऐसी जगह में पहुंचते है जिसके आगे हमको ज्ञान विवेक सूझता नहीं है, इसी का नाम है काला दीवाल।

जिसे हम लक्ष्य पर बनाये थे उसे पाने के बावजूद समस्या शेष रह गयी इसका मतलब है हमारा लक्ष्य सही नहीं था। अत: लक्ष्य पर पुनर्विचार की आवश्यकता बनती है। इसके अभाव में मानव संकट ग्रस्त होता ही है। संकट से छूटना हर व्यक्ति चाहता है।

# व्यवहारात्मक जनवाद page 100

हर मानव ध्यानपूर्वक अध्ययन करने से समझदारी संपन्न हो जाता है। ध्यानपूर्वक अध्ययन करने का मतलब जो शब्दो को सुनते है उनका अर्थ स्वीकृत होना ही बोध है यही अध्ययन है। इसका मतलब हुआ अर्थ बोध होना ही अध्ययन है।

अर्थ बोध होने का प्रमाण अस्तित्व में वस्तु का बोध होना। अस्तित्व में वस्तु का बोध होना ही सहअस्तित्व के बोध का स्वरूप है इसमें हर नर-नारी बोध सम्पन्न होना होता है। इस मुद्दे पर लोक संवाद अवश्यंभावी है।

अस्तित्व में जो भी वस्तुएँ है उन सबका सहअस्तित्व में वैभव होना समझ में आने के उपरान्त स्वयं भी सहअस्तित्व में होना बोध हो जाता है।

# वांग्मय Structure, page 103 - 107

दर्शन : मानव व्यवहार दर्शन
मानव कर्म दर्शन
मानव अभ्यास दर्शन
मानव अनुभव दर्शन

वाद : समाधानात्मक भौतिकवाद
अनुभवात्मक आध्यात्मवाद
व्यवहारात्मक जनवाद

शास्त्र : व्यवहारवादी समाजशास्त्र
आवर्तनशील अर्थशास्त्र
संचेतनावादी मनोविज्ञान

# व्यवहारात्मक जनवाद page 109

परिवार ही मूलत: सभा के रूप में, सभा ही परिवार के रूप में वैभवित होता है।

निर्णय लेने के रूप में सभा कहलाता है, क्रियान्वयन करने के रूप में परिवार कहलाता है।

इस प्रकार परिवार और सभा अविभाज्य होना पाया जाता है।
सभा में संवाद अवश्यंभावी है।

मध्यस्थ दर्शन

# दस सोपानीय व्यवस्था
# (परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था)

दसवां सोपान = 1,000 करोड़ लोग

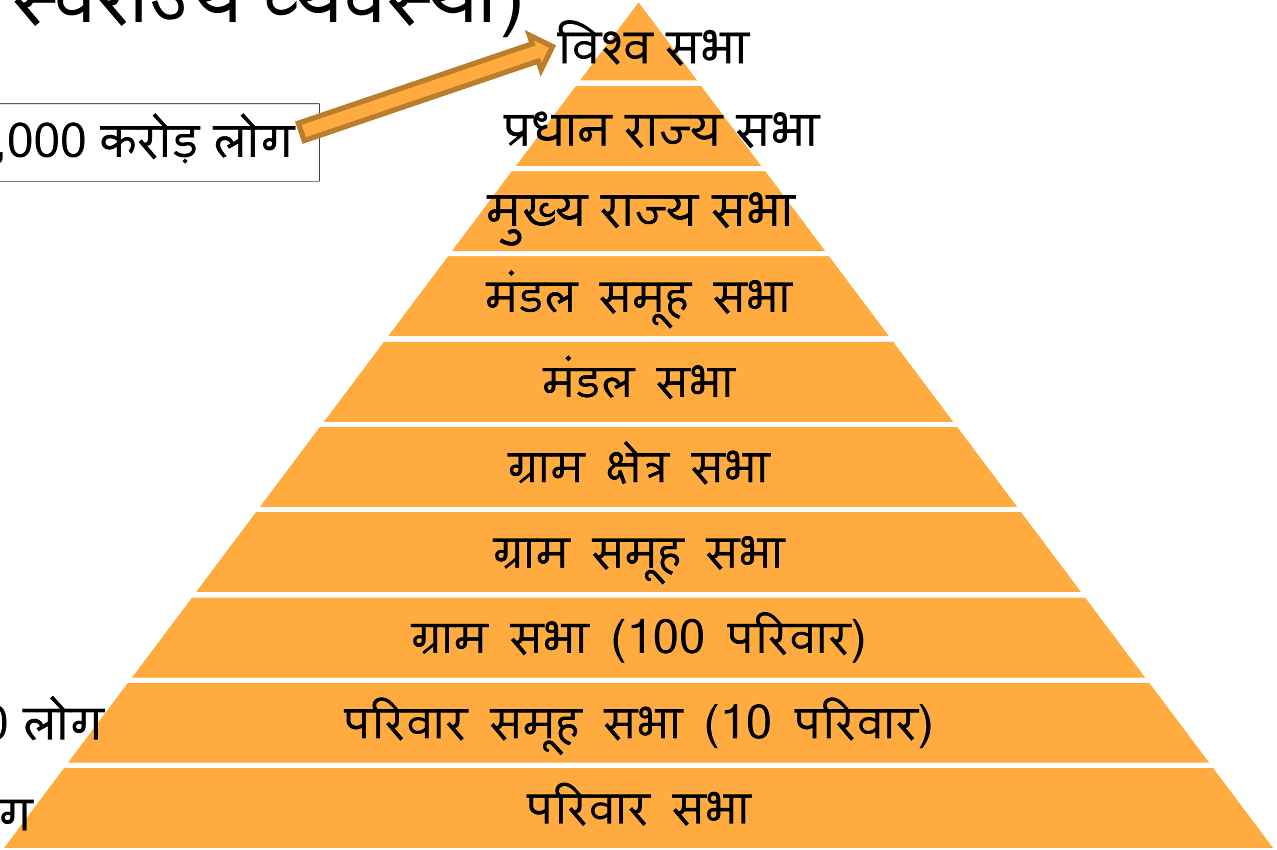


दूसरा सोपान = 100 लोग

पहला सोपान = 10 लोग

# दस सोपानी व्यवस्था, page 109 to 129

व्यवस्था का स्वरुप

1. शिक्षा-संस्कार समिति
2. न्याय-सुरक्षा समिति
3. उत्पादन-कार्य समिति
4. विनिमय-कोष समिति
5. स्वास्थ्य-संयम समिति

# व्यवहारात्मक जनवाद Chapter-8

Page 135 : संवाद का अंतिम लक्ष्य मानवाकाँक्षा का पहचान होना और उसे प्रमाणित करना ही है....समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व ही प्रमाण है.... मानव सदा-सदा अपने में सन्तुष्ट होने के अर्थ में सारा संवाद और अध्ययन करता है, कार्य और व्यवहार भी करता है। पाने की स्थली में रिक्त रहने के स्थान पर ही लक्ष्य के अर्थ में संवाद प्रबल कारण होना पाया जाता है.... संवाद और अध्ययन के आधार पर ही निष्कर्ष निकलता है। जब कभी भी निष्कर्ष निकलता है तब मानवकाँक्षा अथवा मानव लक्ष्य से सूत्रित होना होता है। जैसे कोई भी संवाद अध्ययन, समाधान तक पहुँचने के पहले तृप्ति बिन्दु मिलता नहीं है। अतृप्ति पुन: शोध का कारण बना। इससे यह पता चलता है शोध के अनन्तर शोध, गम्य स्थली तक पहुँच सके ।

अतएव निष्कर्ष यही है जनचर्चा अथवा संवाद, विमर्श, विश्लेषण, विवेचनाएँ, समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व से सूत्रित होने से ही है.

# व्यवहारात्मक जनवाद Chapter-8

Page 138 :

मानव महिमा को जितना ज्यादा हम चित्रित कर पायेंगे कला और साहित्य का अपने आप में लक्ष्य तक पहुँचने की विधि को स्पष्ट करना पाया जाता है। अतएव जनचर्चा में इस बात की एक अच्छी विचारणा आवश्यक है।

कामोन्माद भोगोन्माद के लिए चर्चा को अर्पित किया जाये या समाधान समृद्धि के लिए अर्पित किया जाये। इस तर्क विधि से समाधान समृद्धि के लिए तर्क विधि सार्थक होना स्पष्ट हो जाता है।

मध्यस्थ दर्शन

# Chapter-8 : जनचर्चा की आवश्यकता

- जनचर्चा ही शिक्षा-संस्कार का शिलान्यास/ वातावरण का सूत्र
- जनचर्चा में सामाजिक सूत्रों का उद्घाटन
- जनचर्चा में सहअस्तित्व की अपेक्षा
- जनचर्चा में वास्तविकता को परखने की विधि यथार्थता को उद्घाटित करने की विधि, सत्यता को स्वीकारने की विधि
- जन चर्चा में मानवाकाँक्षा का प्रबल स्थान
- जनचर्चा में मानवीयता पूर्ण योजनाओं की स्वीकृतियाँ
- जनचर्चा में उत्सवो की परिकल्पना, जनचर्चा में क्रीड़ा विनोद की परिकल्पना
- जनचर्चा में मूल्याँकन का स्थान और प्रयोजन
- जनचर्चा में समीक्षा का स्थान और आवश्यकता
- जनचर्चा में अभय समाधान की पुष्टि और इसकी आवश्यकता